रविवार 2 अगस्त, 2020

विषय — प्रेम

स्वर्ण पाठ: 1 यूहन्ना 4 : 16
यूहन्ना 6: 37

"परमेश्वर प्रेम है। जो कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा, उसे मैं कभी न निकालूंगा।"

उत्तरदायी अध्ययन: लूका 6 : 27, 31-33, 35, 36

27 परन्तु मैं तुम सुनने वालों से कहता हूं, कि अपने शत्रुओं से प्रेम रखो; जो तुम से बैर करें, उन का भला करो।
31 और जैसा तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें, तुम भी उन के साथ वैसा ही करो।
32 यदि तुम अपने प्रेम रखने वालों के साथ प्रेम रखो, तो तुम्हारी क्या बड़ाई? क्योंकि पापी भी अपने प्रेम रखने वालों के साथ प्रेम रखते हैं।
33 और यदि तुम अपने भलाई करने वालों ही के साथ भलाई करते हो, तो तुम्हारी क्या बड़ाई? क्योंकि पापी भी ऐसा ही करते हैं।
35 वरन अपने शत्रुओं से प्रेम रखो, और भलाई करो: और फिर पाने की आस न रखकर उधार दो; और तुम्हारे लिये बड़ा फल होगा; और तुम परमप्रधान के सन्तान ठहरोगे, क्योंकि वह उन पर जो धन्यवाद नहीं करते और बुरों पर भी कृपालु है।
36 जैसा तुम्हारा पिता दयावन्त है, वैसे ही तुम भी दयावन्त बनो।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 103 : 1-4

---

1 हेमेरे मन, यहोवा को धन्य कह; और जो कुछ मुझ में है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहे!
2 हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और उसके किसी उपकार को न भूलना।
3 वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता, और तेरे सब रोगों को चंगा करता है,
4 वही तो तेरे प्राण को नाश होने से बचा लेता है, और तेरे सिर पर करूणा और दया का मुकुट बान्धता है,

2. यशायाह 38 : 1-6

1 उन दिनों में हिजकिय्याह ऐसा रोगी हुआ कि वह मरने पर था। और आमोस के पुत्र यशायाह नबी ने उसके पास जा कर कहा, यहोवा यों कहता है, अपने घराने के विषय जो आज्ञा देनी हो वह दे, क्योंकि तू न बचेगा मर ही जाएगा।
2 तब हिजकिय्याह ने भीत की ओर मुंह फेर कर यहोवा से प्रार्थना कर के कहा;
3 हे यहोवा, मैं बिनती करता हूं, स्मरण कर कि मैं सच्चाई और खरे मन से अपने को तेरे सम्मुख जानकर चलता आया हूं और जो तेरी दृष्टि में उचित था वही करता आया हूं। और हिजकिय्याह बिलक बिलककर रोने लगा।
4 तब यहोवा का यह वचन यशायाह के पास पहुंचा,
5 जा कर हिजकिय्याह से कह कि तेरे मूलपुरूष दाऊद का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, मैं ने तेरी प्रार्थना सुनी और तेरे आंसू देखे हैं; सुन, मैं तेरी आयु पन्द्रह वर्ष और बढ़ा दूंगा।
6 अश्शूर के राजा के हाथ से मैं तेरी और इस नगर की रक्षा कर के बचाऊंगा॥

3. मत्ती 4 : 23

23 और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन की सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बल्ता को दूर करता रहा।

4. मत्ती 9 : 18-25

18 वह उन से ये बातें कह ही रहा था, कि देखो, एक सरदार ने आकर उसे प्रणाम किया और कहा मेरी पुत्री अभी मरी है; परन्तु चलकर अपना हाथ उस पर रख, तो वह जीवित हो जाएगी।
19 यीशु उठकर अपने चेलों समेत उसके पीछे हो लिया।
20 और देखो, एक स्त्री ने जिस के बारह वर्ष से लोहू बहता था, उसके पीछे से आकर उसके वस्त्र के आंचल को छू लिया।
21 क्योंकि वह अपने मन में कहती थी कि यदि मैं उसके वस्त्र ही को छू लूंगी तो चंगी हो जाऊंगी।

22 यीशु ने फिरकर उसे देखा, और कहा; पुत्री ढाढ़स बान्ध; तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है; सो वह स्त्री उसी घड़ी चंगी हो गई।
23 जब यीशु उस सरदार के घर में पहुंचा और बांसली बजाने वालों और भीड़ को हुल्लड़ मचाते देखा तब कहा।
24 हट जाओ, लड़की मरी नहीं, पर सोती है; इस पर वे उस की हंसी करने लगे।
25 परन्तु जब भीड़ निकाल दी गई, तो उस ने भीतर जाकर लड़की का हाथ पकड़ा, और वह जी उठी।

5. यूहन्ना 8 : 1-11

1 परन्तु यीशु जैतून के पहाड़ पर गया।
2 और भोर को फिर मन्दिर में आया, और सब लोग उसके पास आए; और वह बैठकर उन्हें उपदेश देने लगा।
3 तब शास्त्री और फरीसी एक स्त्री को लाए, जो व्यभिचार में पकड़ी गई थी, और उस को बीच में खड़ी करके यीशु से कहा।
4 हे गुरू, यह स्त्री व्यभिचार करते ही पकड़ी गई है।
5 व्यवस्था में मूसा ने हमें आज्ञा दी है कि ऐसी स्त्रियों को पत्थरवाह करें: सो तू इस स्त्री के विषय में क्या कहता है?
6 उन्होंने उस को परखने के लिये यह बात कही ताकि उस पर दोष लगाने के लिये कोई बात पाएं, परन्तु यीशु झुककर उंगली से भूमि पर लिखने लगा।
7 जब वे उस से पूछते रहे, तो उस ने सीधे होकर उन से कहा, कि तुम में जो निष्पाप हो, वही पहिले उस को पत्थर मारे।
8 और फिर झुककर भूमि पर उंगली से लिखने लगा।
9 परन्तु वे यह सुनकर बड़ों से लेकर छोटों तक एक एक करके निकल गए, और यीशु अकेला रह गया, और स्त्री वहीं बीच में खड़ी रह गई।
10 यीशु ने सीधे होकर उस से कहा, हे नारी, वे कहां गए? क्या किसी ने तुझ पर दंड की आज्ञा न दी।
11 उस ने कहा, हे प्रभु, किसी ने नहीं: यीशु ने कहा, मैं भी तुझ पर दंड की आज्ञा नहीं देता; जा, और फिर पाप न करना॥

6. लूका 15 : 1-10

1 सब चुंगी लेने वाले और पापी उसके पास आया करते थे ताकि उस की सुनें।
2 और फरीसी और शास्त्री कुड़कुड़ा कर कहने लगे, कि यह तो पापियों से मिलता है और उन के साथ खाता भी है॥

3 तब उस ने उन से यह दृष्टान्त कहा।
4 तुम में से कौन है जिस की सौ भेड़ें हों, और उन में से एक खो जाए तो निन्नानवे को जंगल में छोड़कर, उस खोई हुई को जब तक मिल न जाए खोजता न रहे?
5 और जब मिल जाती है, तब वह बड़े आनन्द से उसे कांधे पर उठा लेता है।
6 और घर में आकर मित्रों और पड़ोसियों को इकट्ठे करके कहता है, मेरे साथ आनन्द करो, क्योंकि मेरी खोई हुई भेड़ मिल गई है।
7 मैं तुम से कहता हूं; कि इसी रीति से एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में भी स्वर्ग में इतना ही आनन्द होगा, जितना कि निन्नानवे ऐसे धमिर्यों के विषय नहीं होता, जिन्हें मन फिराने की आवश्यकता नहीं॥
8 या कौन ऐसी स्त्री होगी, जिस के पास दस सिक्के हों, और उन में से एक खो जाए; तो वह दीया बारकर और घर झाड़ बुहार कर जब तक मिल न जाए, जी लगाकर खोजती न रहे?
9 और जब मिल जाता है, तो वह अपने सखियों और पड़ोसिनियों को इकट्ठी करके कहती है, कि मेरे साथ आनन्द करो, क्योंकि मेरा खोया हुआ सिक्का मिल गया है।
10 मैं तुम से कहता हूं; कि इसी रीति से एक मन फिराने वाले पापी के विषय में परमेश्वर के स्वर्गदूतों के साम्हने आनन्द होता है॥

7. इब्रानियों 10 : 23, 24

23 और अपनी आशा के अंगीकार को दृढ़ता से थामें रहें; क्योंकि जिस ने प्रतिज्ञा किया है, वह सच्चा है।
24 और प्रेम, और भले कामों में उक्साने के लिये एक दूसरे की चिन्ता किया करें।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 2 : 23 (परमेश्वर प्रेम है.) *केवल*

परमेश्वर प्रेम है।

2. 13 : 2-4

प्रेम अपने अनुकूलन और सर्वश्रेष्ठ में निष्पक्ष और सार्वभौमिक है। यह खुला फव्वारा है जो कहता है, "हो, हर एक कि प्यास, तुम पानी के करीब आओ।"

3. 566 : 29-13

पुराना नियम स्वर्गदूतों, परमेश्वर के दिव्य संदेशों, विभिन्न कार्यालयों को प्रदान करता है। माइकल की विशेषता आध्यात्मिक शक्ति है। वह पाप, शैतान की शक्ति के खिलाफ स्वर्ग के बहुरूपियों का नेतृत्व करता है और पवित्र युद्धों से लड़ता है। गेब्रियल के पास हमेशा प्यार की उपस्थिति की भावना प्रदान करने का अधिक शांत कार्य है। ये स्वर्गदूत हमें गहराई तक पहुँचाते हैं। सत्य और प्रेम, शोक की घड़ी में आते हैं, जब मजबूत विश्वास या आध्यात्मिक शक्ति कुश्ती और भगवान की समझ के माध्यम से प्रबल होती है। उनकी उपस्थिति के गेब्रियल में कोई प्रतियोगिता नहीं है। असीम, सदा-सदा के लिए, सब प्रेम है, और न कोई त्रुटि है, न कोई पाप, न बीमारी, न मृत्यु। प्यार के खिलाफ, ड्रैगन लंबे समय तक युद्ध नहीं करता है, क्योंकि वह दिव्य सिद्धांत द्वारा मारा जाता है। ड्रैगन के खिलाफ सत्य और प्रेम प्रबल होता है क्योंकि ड्रैगन उनसे युद्ध नहीं कर सकता। इस प्रकार मांस और आत्मा के बीच संघर्ष समाप्त हो जाता है।

4. 454 : 17-21

ईश्वर और मनुष्य के लिए प्यार हीलिंग और शिक्षण दोनों में सच्चा सिद्धांत है। प्रेम प्रेरणा देता है, रोशनी करता है, नामित करता है और मार्ग प्रशस्त करता है। सही इरादों ने विचार, और ताकत और बोलने और कार्रवाई करने की स्वतंत्रता को चुटकी दी।

5. 19 : 6-11

यीशु ने मनुष्य को ईश्वर की शिक्षा, यीशु की शिक्षाओं के दिव्य सिद्धांत, और प्रेम के इस तुच्छ अर्थ को मनुष्य की आत्मा, के नियम, और मृत्यु के नियम से मनुष्य की मृत्यु के रूप में समझने की कोशिश की। ईश्वरीय प्रेम का नियम।

6. 52 : 19-23

"दुखों का आदमी" भौतिक जीवन और बुद्धिमत्ता की श्रेष्ठता और सभी समावेशी ईश्वर की ताकतवर वास्तविकता को अच्छी तरह से समझता है। ये मन की चिकित्सा या क्रिएचरियन साइंस के दो मुख्य बिंदु थे, जिसने उन्हें प्यार से सशस्त्र किया।

7. 359 : 20-28

प्यूरिटन माता-पिता से, क्राइस्टियन साइंस के खोजकर्ता ने जल्दी से अपनी धार्मिक शिक्षा प्राप्त की। बचपन में, वह अक्सर अपनी धर्मी माँ के होठों से खुशी के साथ ये शब्द सुनती थी, "भगवान आपको बीमारी से ठीक करने

में सक्षम है?" और वह उस पवित्रशास्त्र के अर्थ पर ध्यान देती है जिसे वह अक्सर उद्धृत करता है: "और विश्वास करने वालों में ये चिन्ह होंगे कि... वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएंगे।"

8. 26 : 5 (यीशु)-9, 21-27

यीशु ने हमें व्यक्तिगत अनुभव नहीं दिया, अगर हम उसकी आज्ञाओं का ईमानदारी से पालन करें; और सभी ने अपने प्रेम के प्रदर्शन के अनुपात में पीने के लिए दुःखद प्रयास किए, जब तक सभी दिव्य प्रेम के माध्यम से मुक्त नहीं हो जाते।

यीशु के शिक्षण और सत्य के अभ्यास में ऐसा बलिदान शामिल है जो हमें अपने सिद्धांत को प्रेम के रूप में स्वीकार करता है। यह हमारे गुरु के पाप रहित जीवन और मृत्यु पर उनके शक्ति प्रदर्शन का अनमोल आयात था। उन्होंने अपने कर्मों से यह साबित कर दिया कि क्रिश्चियन साइंस बीमारी, पाप और मृत्यु को नष्ट करता है।

9. 365 : 15-19

यदि वैज्ञानिक दिव्य प्रेम के माध्यम से अपने रोगी तक पहुँचता है, चिकित्सा कार्य एक यात्रा में पूरा किया जाएगा, और रोग सुबह की धूप से पहले ओस की तरह अपनी मूल शून्यता में गायब हो जाएगा।

10. 366 : 12-21

जिस चिकित्सक को अपने साथी के प्रति सहानुभूति की कमी है, वह मानवीय स्नेह में कमी है, और हमारे पास पूछने के लिए एपोस्टोलिक वारंट है "जो अपने भाई से, जिस उस ने देखा है, प्रेम नहीं रखता, तो वह परमेश्वर से भी जिसे उस ने नहीं देखा, प्रेम नहीं रख सकता।" इस आध्यात्मिक स्नेह के न होने पर, चिकित्सक को दिव्य मन में विश्वास की कमी है और असीम प्रेम की मान्यता नहीं है जो अकेले ही चिकित्सा शक्ति प्रदान करता है। इस तरह के तथाकथित वैज्ञानिक मक्खियों को बाहर निकाल देंगे, जबकि वे बड़े पैमाने पर साहित्यिकता के ऊंटों को निगल लेंगे।

11. 367 : 3-9

निविदा शब्द और क्रिश्चियन को एक अवैध, दयनीय धैर्य के साथ अपने भय और उन्हें हटाने के लिए प्रोत्साहित करना, कुटिल सिद्धांतों की जद्दोजहद से बेहतर है, उधार दिए गए भाषणों, और तर्कों की डोलिंग, जो कि वैध क्रायश्चियन साइंस पर इतने सारे पैरोडी हैं। दिव्य प्रेम के साथ।

12. 454 : 10-13

प्रेम में उत्साह होता है। उस स्पष्ट या पदार्थ में न तो बुद्धिमत्ता है और न ही शक्ति, पूर्ण क्रिएचरियन विज्ञान का सिद्धांत है, और यह महान सत्य है जो कठिनाई से सभी भेस को अलग करता है।

13. 337 : 7-13

सच्ची खुशी के लिए, मनुष्य को अपने सिद्धांत, दिव्य प्रेम के साथ सामंजस्य करना चाहिए; पुत्र को पिता के अनुरूप होना चाहिए, मसीह के अनुरूप होना चाहिए। ईश्वरीय विज्ञान के अनुसार, मनुष्य एक प्रकार से पूर्ण रूप में मन के रूप में है जो उसे बनाता है। मनुष्य होने का सत्य मनुष्य को सामंजस्यपूर्ण और अमर बनाता है, जबकि त्रुटि नश्वर और कलहकारी है।

14. 570 : 14-18

लाखों अजेय मन - सत्य के लिए सरल साधक, थके हुए भटकने वाले, रेगिस्तान में प्यासे - आराम करने और पीने के लिए इंतजार कर रहे हैं। उन्हें मसीह के नाम पर एक कप ठंडा पानी दें, और इसके परिणामों से कभी न डरें।

15. 57 : 23-30

प्रेम प्रकृति को समृद्ध करता है, बड़ा करता है, शुद्ध करता है और उसे उन्नत करता है। पृथ्वी के ठंढे धमाके स्नेह के फूलों को उखाड़ सकते हैं, और उन्हें हवाओं में बिखेर सकते हैं; लेकिन शारीरिक संबंधों का यह विचलन ईश्वर के प्रति अधिक निकटता से विचार करने का कार्य करता है, क्योंकि प्रेम संघर्षशील हृदय का समर्थन करता है, जब तक कि वह दुनिया को छोड़ नहीं देता और स्वर्ग के लिए अपने पंखों को खोलना शुरू कर देता है।

16. 577 : 32-18

निम्नलिखित कोड में एक शब्द दिखाता है, हालांकि मंद रूप से, क्राइस्टियन साइंस जो प्रकाश देवता के आध्यात्मिक अर्थ के साथ भौतिक अर्थ के लिए प्रतिस्थापन द्वारा शास्त्र पर डालता है: —

भजन संहिता 23

[दिव्य प्रेम] मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ घटी न होगी।
[प्रेम] मुझे हरी हरी चराइयों में बैठाता है; [प्रेम] मुझे सुखदाई जल के झरने के पास ले चलता है;

[प्रेम] मेरे जी में जी ले आता है। धर्म के मार्गों में [प्रेम] अपने नाम के निमित्त मेरी अगुवाई करता है।

चाहे मैं घोर अन्धकार से भरी हुई तराई में होकर चलूं, तौभी हानि से न डरूंगा, क्योंकि [प्रेम] मेरे साथ रहता है;

[प्रेम का] सोंटे और [प्रेम का] लाठी से मुझे शान्ति मिलती है॥

[प्रेम] मेरे सताने वालों के साम्हने मेरे लिये मेज बिछाता है; [प्रेम] ने मेरे सिर पर तेल मला है, मेरा कटोरा उमण्ड रहा है।

निश्चय भलाई और करूणा जीवन भर मेरे साथ साथ बनी रहेंगी; और मैं [प्रेम] के [चेतना] धाम में वास करूंगा ॥

17. 248 : 3 ***केवल***

प्रेम कभी भी प्रेम की दृष्टि नहीं खोता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6